हिन्दी साहित्य

द्वितीय प्रश्न पत्र–निबन्ध एवं नाटक

Time Allowed : Three Hours **Maximum marks : 100**

सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिये।

1. निम्नलिखित अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिये :

(क) रामायण के समय से भारत (महाभारत) के समय में लोगों के हृदयगत भावों में कितना अन्तर हो गया था कि रामायण में दो प्रतिद्वन्द्वी भाई इस बात के लिए विवाद कर रहे थे कि यह समस्त राज्य और राज्य–सिंहासन हमारा नहीं है, यह सब तुम्हारे हाथ में रहे। अन्त में रामचन्द्र ने भरत को विवाद में पराभूत कर समस्त साम्राज्य उनके हस्तगत कर आप आनन्द–निर्भर–चित्त हो सस्त्रीक बनवासी हुए। वहीं महाभारत में दो दायाद भाई इस बात के लिए कलह करने पर सन्नद्ध हुए कि जितने में सुई का अंग्रभाग ढँक जाय इतनी पृथ्वी भी बिना युद्ध के हम न देंगे– "सूच्यग्रं नैव दास्यामि विना युद्धेन केशव!" परिणाम में एक भाई दूसरे पर जयलाभ कर तथा जंघा पर गदाघात और मस्तक पर पदाघात से उसका वध कर भाई के राज्य–सिंहासन पर आरूढ़ हो सुख में फूल कर अनेक तरह के यज्ञ और दान में प्रवृत्त हुआ।

अथवा

भक्ति आन्दोलन से जो भावात्मक एकता स्थापित हुई, उसमें जितना फैलाव था, उतनी गहराई भी थी। यह एकता समाज के थोड़े से शिक्षित जनों तक सीमित नहीं थी। संस्कृत के द्वारा जो राष्ट्रीय एकता कायम हुई थी उससे यह भिन्न थी। इसकी जड़े नगरों और गाँवों की अपढ़ जनता के बीच गहरी चली गई थीं। यह एकता प्रादेशिक भाषाओं के माध्यम से कायम हो रही थी। भक्ति आन्दोलन एक ओर अखिल भारतीय आन्दोलन था, दूसरी ओर वह प्रदेशगत, जातीय आन्दोलन था। देश और प्रदेश एक साथ, राष्ट्र और जाति दोनों की सांस्कृतिक धाराएँ एक साथ। भक्ति आन्दोलन की व्यापकता और सामर्थ्य का यही रहस्य था।

http://www.rtuonline.com

ma9300930012@gmail.com

Whatsapp @ 9300930012
Your old paper & get 10/-
पुराने पेपर्स भेजे और 10 रुपये पायें,
Paytm or Google Pay से

http://www.rtuonline.com

PTO

http://www.rtuonline.com

(ख) हमारे यहाँ धर्म से अभ्युदय और निःश्रेयस दोनों की सिद्धि कही गई है। अतः मोक्ष का–किसी ढंग से मोक्ष का–मार्ग धर्ममार्ग से बिल्कुल अलग–अलग नहीं जा सकता। धर्म का विकास इसी लोक के बीच हमारे परस्पर व्यवहार के भीतर होता है। अतः हमारे जीवन की पूर्णता कर्म (धर्म), ज्ञान और भक्ति तीनों के समन्वय में है। साधना किसी प्रकार की हो, साधक की पूरी सत्ता के साथ होनी चाहिए– उसके किसी अंग को सर्वथा छोड़कर नहीं। यह हो कि कोई ज्ञान को प्रधान रखकर धर्म और उपासना को अंगरूप में लेकर चलें, कोई भक्ति को प्रधान रखकर ज्ञान और कर्म को अंग रूप में रखकर चलें।

अथवा

उच्च शौर्य, भव्य त्याग, आत्म–बलिदान, शरणागत–पालन और स्वातन्त्र्य प्रेम का जो ज्वलन्त आदर्श राजस्थानी साहित्य में कूट–कूट कर भरा है वह किसी भी सहृदय व्यक्ति का ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर सकता है। इतना ही नहीं, किसी भी काल का सच्चा वीर उससे किसी भी अंश में अवश्य स्फूर्ति ग्रहण कर सकता है। 'रण खेती राजपूत री' और सचमुच ही योद्धाओं के रक्त से सींची जाकर इस मरूधरा ने जो खेती उपजाई है, जो कविरत्न और वीर–रत्न उत्पन्न किये हैं, उनका स्मरण भी आज रोमांच और हर्षोद्रेक का कारण हो सकता है – यह विश्वास होने लगता है कि जिस देश को इस प्रकार की महामहिमाशाली संस्कृति का बल प्राप्त हो, उसके लिए निराश होने की बात नहीं है।

(ग) हो सकता है आप पापी न हों ! यह भी हो सकता है कि आपके दिल में कोई बुरा ख्याल न हो ! पर मैं यह कभी नहीं मान सकती कि उसके दिल में भी कुछ नहीं। कोई नारी मन में किसी तरह का पाप रखे बिना, किसी दूसरे पुरुष को इस तरह अपना सब कुछ सौंप सकती है, मैं इस बात को स्वीकार नहीं कर सकती और फिर वह पुरुष ही किसी सुकोमल भावना के बिना कैसे इतनी भारी जिम्मेदारी अपने कन्धों पर ले सकता है? ध ोखा हो सकता है, चोरी हो सकती है, चीज इधर से उधर हो सकती है और अब तो मुझे और भी सन्देह है कि यह सब कुछ एक दिन होकर रहेगा। हमारी बिसात ही क्या है? हम उमर भर भी कमाते रहे तो इनमें से एक चीज की कीमत न चुका सकेंगे और आप क्या यह सब जानते नहीं? बताइये मैं इसे क्या समझूँ?

अथवा

शेली ने जो कुछ कहा वह सब पागलपन था। किस पवित्रता और किस संदेश की बातें कर रहे हो? इनका दुनिया में कोई अस्तित्व ही नहीं। नेपालियन शक्ति का प्रतिनिधि था और भक्ति ही सत्य है, नित्य है। कल्पना के लोक में जो आदमी विचरता है, वह कायर है। इस वास्तविक जगत में मुँह छिपाकर वह कल्पना का जगत बनाता है। आदमी तो वह जो इस दुनिया को अपनी कल्पना की दुनिया में बदल सके। नेपालियन में वह ताकत थी–वह व्यक्तित्व था।

2. 'राष्ट्र का स्वरूप' निबन्ध के आधार पर राष्ट्र की अवधारणा को और संस्कृति के राष्ट्रीय जीवन में महत्व को स्पष्ट कीजिये। (शब्द सीमा 500 शब्द)

अथवा

'मानस की धर्म–भूमि शीर्षक निबन्ध में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल द्वारा व्यक्त विचारों

http://www.rtuonline.com

http://www.rtuonline.com

http://www.rtuonline.com

को स्पष्ट कीजिये।　　　　　　　　　(शब्द सीमा 500 शब्द)

अथवा

3. "जगदीश चन्द्र माथुर के 'भोर का तारा' एकांकी में कला और देश प्रेम का संघर्ष यथार्थ के धरातल पर प्रस्तुत किया गया है।" इस कथन को सप्रमाण सिद्ध कीजिये।　　　　　　　　　(शब्द सीमा 500 शब्द)

अथवा

भगवतीचरण वर्मा का 'सबसे बड़ा आदमी' एकांकी एक व्यंग्यात्मक एकांकी है, इसे स्पष्ट करते हुए इस एकांकी की मूल संवेदना पर प्रकाश डालिये। (शब्द सीमा 500 शब्द)

4. अभिनेयता की दृष्टि से 'रक्तध्वज' नाटक की समीक्षा कीजिये। (शब्द सीमा 500 शब्द)

अथवा

" 'रक्तध्वज' नाटक का उद्देश्य अन्याय और अत्याचार के विरूद्ध आवाज उठाना और अहिंसा तथा शान्ति का सन्देश देना है।" इस कथन की सोदाहरण समीक्षा कीजिये।　　　　　　　　　(शब्द सीमा 500 शब्द)

5. हिन्दी एकांकी के उद्भव और विकास पर प्रकाश डालिये। (शब्द सीमा 500 शब्द)

अथवा

निम्नलिखित में से किन्हीं चार पर टिप्पणियाँ लिखिये :

1. भारतेन्दु युग के निबन्ध
2. निबन्धकार पं. विद्यानिवास मिश्र
3. हिन्दी एकांकी के तत्त्व
4. नाटककार जयशंकर प्रसाद
5. नाटक के नायकों के प्रकार
6. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का हिन्दी निबन्ध साहित्य को योगदान
7. निबन्ध की शैलियाँ।　　　　　　　　　(शब्द सीमा 500 शब्द)

http://www.rtuonline.com

http://www.rtuonline.com